तानसेन काँपता हुआ उठा, काँपता हुआ आगे बढ़ा और काँपता हुआ बैजू बावरा के पाँव में गिर पड़ा। वह जिसने अपने जीवन में किसी पर दया न की थी, इस समय दया के लिए गिड़गिड़ा रहा था और कह रहा था – ''मेरे प्राण न लो!''

बैजू बावरा ने कहा –''मुझे तुम्हारे प्राण लेने की चाह नहीं। तुम इस निष्ठुर नियम को उड़वा दो कि जो कोई आगरे की सीमाओं के अंदर गाए, अगर तानसेन के जोड़ का न हो तो मरवा दिया जाए।''

अकबर ने अधीर होकर कहा – ''यह नियम अभी, इसी क्षण से उड़ा दिया गया।'' तानसेन बैजू बावरा के चरणों में गिर गया और दीनता से कहने लगा – ''मैं यह उपकार जीवन भर न भूलूँगा।''

(१) लिखिए :

हरिण बुला पाने में असमर्थ तानसेन की बौखलाहट –

(१) ----------

(२) ----------

(३) ----------

(४) ----------

(२) गद्यांश में प्रयुक्त प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

(१) ----------

(२) ----------

(३) ----------

(४) ----------

(३) 'मनुष्य जीवन में अहिंसा का महत्त्व' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए।

उत्तर

टिप्पणी : *कृति अ – १ आकलन पर आधारित कृति है, जो २ अंकों की होगी। इसमें आकृति पूर्ण कीजिए/संजाल पूर्ण कीजिए/एक शब्द में उत्तर लिखिए/एक वाक्य में उत्तर लिखिए/उचित जोड़ मिलाइए*

प्र. १. (आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

एक युग बीत जाने पर भी मेरी स्मृति से एक घटा भरी अश्रुमुखी सावनी पूर्णिमा की रेखाएँ नहीं मिट सकी हैं। उन रेखाओं के उजले रंग न जाने किस व्यथा से गीले हैं कि अब तक सूख भी नहीं पाए, उड़ना तो दूर की बात है।

उस दिन मैं बिना कुछ सोचे हुए ही भाई निराला जी से पूछ बैठी थी, 'आपके किसी ने राखी नहीं बाँधी?' अवश्य ही उस समय मेरे सामने उनकी बंधनशून्य कलाई और पीले कच्चे सूत की ढेरों राखियाँ लेकर घूमने वाले यजमान-खोजियों का चित्र था। पर अपने प्रश्न के उत्तर ने मुझे क्षण भर के लिए चौंका दिया।

'कौन बहिन हम जैसे भुक्खड़ को भाई बनावेगी!' में उत्तर देने वाले के एकाकी जीवन की व्यथा थी या चुनौती, यह कहना कठिन है पर जान पड़ता है कि किसी अव्यक्त चुनौती के आभास ने ही मुझे उस हाथ के अभिषेक की प्रेरणा दी, जिसने दिव्य वर्ण-गंध मधुवाले गीत सुमनों से भारती की अर्चना भी की है और बर्तन माँजने, पानी भरने जैसी कठिन श्रमसाधना से उत्पन्न स्वेद बिंदुओं से मिट्टी का शृंगार भी किया है।

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :

(i) लेखिका के सामने ये चित्र थे –

(ii) कवि के जवाब पर कवयित्री का तर्क –

(२) निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

(१) कच्चे × ----------
(२) प्रश्न × ----------
(३) कठिन × ----------
(४) जीवन × ----------

(३) 'भाई-बहन का रिश्ता अनूठा होता है' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों अपना मत लिखिए।

(१) कारण लिखिए : २

(१) नीच को छेड़ना नहीं चाहिए – ----------

---

(२) उच्च पद पर आसीन का पतन निश्चित है – ----------

---

(२) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए : २

(१) पाथर (पत्थर) = ---------- (३) कोकिल = ----------

(२) भान (भानु) = ---------- (४) गात = ----------

(३) 'ज्ञान की पूँजी बढ़ानी चाहिए।' इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए। २

प्र. २. (इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'पेड़ होने का अर्थ' कविता का रसास्वादन कीजिए : ६

(१) रचनाकार का नाम।

(२) पसंद की पंक्तियाँ।

(३) पसंद आने का कारण।

(४) कविता की केंद्रीय कल्पना।

उत्तर

टिप्पणी : *इस प्रश्न में दो प्रश्न दिए जाएँगे, जिनमें से किसी एक प्रश्न को हल करना होगा। पहले प्रश्न में मुद्दों के आधार पर किसी कविता का १०० से १२० शब्दों में रसास्वादन करने के लिए कहा जाएगा। दूसरे प्रश्न में किसी कविता का अर्थ के आधार पर १०० से १२० शब्दों में रसास्वादन (रसग्रहण) करने के लिए कहा जाएगा। दोनों में से कोई एक प्रश्न हल करना होगा।*

(यहाँ विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए दोनों प्रश्नों के उत्तर दिए जा रहे हैं।)

- **मुद्दो के आधार पर 'पेड़ होने का अर्थ' कविता का रसास्वादन।**

(१) **रचनाकार का नाम :** डॉ. मुकेश गौतम।

(२) **पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव :** कविता की पसंद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

राह में गिरा देता है फूल,
और करता है इशारा उसे आगे बढ़ने का।

(३) **कविता पसंद आने का कारण :** प्रस्तुत कविता में कवि ने पेड़ के माध्यम से मनुष्य को मानवता, परोपकार जैसे मानवोचित गुणों की प्रेरणा दी है।

(४) **कविता की केंद्रीय कल्पना :** सब कुछ दूसरों को देकर जीवन की सार्थकता सिद्ध करना। पेड़ मनुष्य का बहुत बड़ा शिक्षक है। पेड़ मनुष्य का हौसला बढ़ाता है। वह उसे समाज के प्रति जिम्मेदारी का निर्वाह करना सिखाता है। पेड़ ने भारतीय संस्कृति को जीवित रखा है और उसने मानव को संस्कारशील बनाया है।

प्र. (१) एवं (२) के लिए १–१ अंक तथा प्र. (३) और (४) के लिए २-२ अंक; कुल ६ अंक।

अथवा

- बसंत ऋतु आते ही हर तरफ फूल महकने लगते हैं। सरसों फल जाती है और परी

मुद्दो के आधार पर 'पेड़ होने का अर्थ' कविता का रसास्वादन।

(१) **रचनाकार का नाम :** डॉ. मुकेश गौतम।

(२) **पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव :** कविता की पसंद की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

राह में गिरा देता है फूल,
और करता है इशारा उसे आगे बढ़ने का।

(३) **कविता पसंद आने का कारण :** प्रस्तुत कविता में कवि ने पेड़ के माध्यम से मनुष्य को मानवता, परोपकार जैसे मानवोचित गुणों की प्रेरणा दी है।

(४) **कविता की केंद्रीय कल्पना :** सब कुछ दूसरों को देकर जीवन की सार्थकता सिद्ध करना। पेड़ मनुष्य का बहुत बड़ा शिक्षक है। पेड़ मनुष्य का हौसला बढ़ाता है। वह उसे समाज के प्रति जिम्मेदारी का निर्वाह करना सिखाता है। पेड़ ने भारतीय संस्कृति को जीवित रखा है और उसने मानव को संस्कारशील बनाया है।